35 हजार मवेशी सड़कों पर, योजनाएं सिर्फ अस्थायी

समस्या ● सड़क हादसों का बने कारण, पुनर्वास के लिए गो अभयारण्य व आश्रय गृह की सुविधा अधर में

सड़क पर बेसहारा मवेशी

नईदुनिया प्रतिनिधि, बिलासपुर: जिले में लगभग 35 हजार बेसहारा मवेशी सड़कों पर घूम रहे हैं। उन्हें स्थायी पुनर्वास देने के लिए शासन स्तर पर कई योजनाएं चलाई तो जा रही हैं, लेकिन अधिकांश कागजों तक सीमित हैं। हाई कोर्ट के निर्देश और प्रशासनिक कोशिशों के बावजूद इन मवेशियों को सड़क से दूर करने गोअभयारण्य व पशु आश्रय गृह बनाए गए हैं, बावजूद इसके इनका स्थायी पुनर्वास नहीं हो पा रहा है। इससे रोजाना यह मवेशी दुर्घटनाओं का कारण बन रहे हैं। इससे आमजन के साथ मवेशियों की जान भी खतरे में है।

बिलासपुर जिले में बेसहारा पशुओं को सड़क से दूर करने गो अभयारण्य व पशु आश्रय गृह की सुविधा शासन स्तर पर की गई है। इनमें सड़कों पर घूम रहे 35 हजार मवेशियों को आश्रय देना है। लेकिन शासन स्तर पर चल रही योजना पर अमल नहीं होने से यह योजना केवल कागजों तक ही सिमटी जा रही है। यह स्थिति तब है जब यह पशु न केवल यातायात में बाधा बनते हैं, बल्कि आए दिन दुर्घटनाओं का कारण भी बन रहे हैं। इन हादसों में या तो मवेशी मारे जाते हैं या फिर वाहन चालकों की जान पर बन आती है। शासन द्वारा गो अभयारण्य और अस्थायी आश्रय स्थलों की कई योजनाएं चला रही हैं, लेकिन धरातल पर इनका क्रियान्वयन बेहद कमजोर है। ज्यादातर योजना फाइलों में सिमटी हुई हैं। हाई कोर्ट द्वारा भी मवेशियों को आश्रय दिलाने के लिए कई बार आदेश जारी किए गए हैं। इसके बाद जिला प्रशासन ने रतजगा अभियान चलाकर मवेशियों को रात में पकड़कर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने की कवायद भी की, लेकिन ये प्रयास सतत और प्रभावी नहीं हो सके।

156 एकड़ में बन रहा गो अभयारण्य

कोटा ब्लाक के जोगीपुर में बेसहारा मवेशियों को सुरक्षित आश्रय देने के लिए शासन स्तर पर 156 एकड़ में गो अभ्यारण्य बनाया जा रहा है। योजना के तहत गोअभयारण्य में 14 लाख खर्च कर शेड व चारागाह मनरेगा के तहत बनाया गया है। इन अभयारण्य में पशुओं की देखरेख और उपचार की सुविधा पशु चिकित्सा विभाग को करनी थी। गोअभयारण्य का कार्य अब तक पूर्ण नहीं होने से इस बेसहारा मवेशियों को स्थायी आश्रय नहीं उपलब्ध हो सका है।

तेलीपारा मार्ग में सड़क पर खुलेआम घूमते बेसहारा मवेशी। ● नईदुनिया

बेसहारा मवेशियों के अब भी हैं अस्थायी इंतजाम

हाई कोर्ट के निर्देश के बाद मवेशियों को सड़क पर आने से रोकने के लिए व दुर्घटना की रोकथाम के लिए रेडियम पट्टा या सींग पर रेडियम लगाया जा रहा है, जिससे वाहन चालकों को मवेशी दूर से दिखाई दे सके। इसके अलावा, मोपका गोठान में इन बेसहारा मवेशियों को रखा जा रहा है।

इसलिए आते हैं मवेशी सड़क पर

सड़क पर मवेशी बारिश या ठंड में ज्यादा आते हैं। जानकारों की मानें तो इसका कारण दिनभर वाहनों की आवाजाही की वजह से सड़क पर हल्की गर्मी रहती है। इससे मवेशी सड़क पर गर्मी पाने आते हैं। दूसरा कारण जहरीले जीव जंतु व मच्छर से बचाव के लिए सड़क पर डेरा डालते हैं। बारिश के दिनों में मवेशी सूखी जमीन की तलाश में पहुंचते हैं। हालांकि अभी गर्मी में भी ये खतरा बने हुए हैं।

रतजगा अभियान कुछ दिनों तक ही चला

हाई कोर्ट बिलासपुर ने मवेशियों की सड़कों पर बढ़ती संख्या को देखते हुए जिला प्रशासन को स्थायी समाधान के लिए निर्देश दिया था। निर्देश के बाद कलेक्टर अवनीश शरण ने नगर निगम आयुक्त अमित कुमार व एसडीएम पीयूष तिवारी के नेतृत्व में टीम का गठन किया था। टीम रात 10 बजे से 12 बजे तक शहर की सड़कों के अलावा नेशनल हाईवे से बेसहारा मवेशियों को लाकर आश्रय गृह मोपका में रख रही थी। लेकिन कुछ दिनों तक चली यह योजना फिर ठंडे बस्ते में चली गई।